IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss S . Issu1, 2022

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके सामाजिक सामंजस्य पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमति रागिनी सरजारे
पी.एच.डी. शोधार्थी
स्कूल ऑफ एजुकेशन
मैट्स विश्वविद्यालय,रायुपर,छ.ग.

डॉ. (श्रीमति) संगीता शराफ
सह–प्राध्यापक
शोध निर्देशिका
स्कूल ऑफ एजुकेशन
मैट्स विश्वविद्यालय,रायुपर,छ.ग.

सारांश

शिक्षा संस्कार की जननी है शिक्षा से सभ्यता का विकास होता है जिसके कारण ही वह अपने समाज में विद्यमान आदर्शों को ग्रहण करता है और भविष्य में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहता है।

वर्तमान समय में सेवा से पूर्व प्रशिक्षण देने का कार्य कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों द्वारा किया जा रहा है। इससे समाज, राष्ट्र एवं छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा था। इसिलये विचार किया गया शिक्षण महाविद्यालयों के कार्य एवं सेवा क्षेत्र को विस्तृत व्यापक बनाया जाए। इन महाविद्यालयों द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण के अतिरिक्त सेवाकाल में प्रशिक्षण, सामुदायिक कार्यों के विकास एवं सामाजिक चेतना जैसे क्षेत्रों में भी कार्य किया जायें। इस विचार धारा ने शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के साथ व्यापक कार्य तथा व्यापक शब्द जोड़ दिया। शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में व्यापकता का समावेश वर्तमान युग की अनिवार्य माँग है। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा के महाविद्यालयों की अवधारणा का उदय हुआ। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में ही जन्म लेता है और मत्य भी समाज में ही होती है। समाज में व्यक्ति रहकर ही जितना अपने में खद से संतष्ठ तथा सामंजस्य करन की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक वातावरण से रहन–सहन आदि बाते व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से सामंजस्य बनायें रखना होता है सामाकि वातावरण के अनुसार उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्ट और पुराने अनुभव करना चाहिए और सामाजिक समायोजन कर सकता है।

शब्द– महाविद्यालय, प्रशिक्षार्थी, नैतिक मूल्य, सामाजिक सामंजस्य मूल्य

प्रस्तावना –

शिक्षा विकास की वह अनवरत् प्रक्रिया है जिसका ना कोई आदि है और न अंत। आज के युग में यह आवश्यक नहीं वरन् महत्वपूर्ण है कि हम शिक्षा को ऐसे रूप में देखे जिनमें न केवल शिक्षक अभिभावक और छात्र वरन् सम्पूर्ण समाज सतत् रूचि ले चूँकि शिक्षा एक ऐसी कुंजी है जो कई दरवाजे को खोलती है जिसकी श्रेष्ठता पर जीवन सफल एवं सार्थक बनाना है तो शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय की नजर अंदाज नहीं कर सकते हैं। शिक्षा संस्कार की जननी है शिक्षा

Research Paper © **2012 IJFANS. All Rights Reserved**

उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहता है। समाज में व्यक्ति रहकर ही जितना अपने में खुद से सभ्यता का विकास होता है जिसके कारण ही वह अपने समाज में विद्यमान आदर्शों को ग्रहण करता है और भविष्य में

व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से सामंजस्य बनायें रखना होता है सामाकि वातावरण के अनुसार उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्ट और पुराने अनुभव करना चाहिए और सामाजिक समायोजन कर सकता है।

नैतिक मूल्य–

से संतुष्ठ तथा सामंजस्य करने की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक वातावरण से रहन–सहन आदि बाते

मूल्य की प्रकृति के संदर्भ में विचार किया जाए तो प्रायः यह तथ्य स्पष्ट होता है कि मूल्य सकारात्मक एवं उपयोगी पक्ष से सम्बंधित होते है अर्थात् मूल्य की प्रकृति सकारात्मक तथा धनात्मक होती है क्योंकि मूल्य विहीन कोई विचार समाज के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होता। दूसरे शब्दा में जिस विचार या वस्तु की समाज के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होता। दूसरे शब्दों में जिस विचार या वस्तु की समाज में उपयोगिता नहीं होती है उसको मूल्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। इस प्रकार मूल्यों की प्रकृति का सम्बंध प्रायः सकारात्मक उपयोगिता, विशेषता एव परिस्थितियाँ से होता है। समाज द्वारा उस मूल्य को भी कभी स्वीकार नहीं किया जाता जो सार्वभौमिकन हो। उदाहरण के रूप में चालकि दर्शन कहलाता है। "यावज्जीवते श्रुखं जीवते ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत" अर्थात् व्यक्ति को जब तक जीवन जीना है सुख से जीना चाहिए। इसके लिए उनकी ऋण लेकर भी घी पीना चाहिये। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति को अपने सुख के लिए सब कुछ कर लेना चाहिए। इस मूल्य को भारतीय समाज के अधिकांश व्यक्ति अस्वीकार करते हैं, क्योंकि भारतीय समाज की दृष्टि से यह मूल्य सार्वभौमिक नहीं है। भारतीय संस्कृति एवं दर्शन का इसके ठीक विपरीत मूल्य है कि ऋण तो पिता का भी बुरा होता है।

सामाजिक सामंजस्य –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में ही जन्म लेता है और मृत्यु भी समाज में ही होती है। समाज में व्यक्ति रहकर ही जितना अपने में खुद से संतुष्ठ तथा सामंजस्य करने की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक वातावरण से रहन–सहन आदि बाते व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से सामंजस्य बनायें रखना होता है सामाकि वातावरण के अनुसार उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्ट और पुराने अनुभव करना चाहिए और सामाजिक समायोजन कर सकता है।

जन्म के समय बालक में सभी प्रकार के सामाजिक गुणों का अभाव होता है वह माता–पिता एवं समाज के सम्पर्क में आकर मुस्कुराना व पहचानना सीखता है। आगे चलकर वह सामाजिक शिष्टाचार के अनेक गुणों को सीखता है। समाजशास्त्र में बच्चे के सामाजिक बनने की इस क्रिया को सामाजिकता कहा जाता है। और सामंजस्य एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने को समाज में स्थापित करता है और समाज द्वारा बनायें गयें वातावरण में अपने ढ़ालने के लिए या सम्मिलित होने के लिए तैयार रहता है यह जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है व्यक्ति पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्य बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

अध्ययन की आवश्यकता –

मनुष्य नैतिकता के अभाव में मनुष्यता का आंकलन संभव नहीं है नैतिकता व्यक्ति के विकास में एक सीढ़ी के समान है जिसके सहारे हम अपने जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं और नैतिक मूल्य के अभाव में मनुष्य मानव जीवन को अपने असामान्य बना देता है बिना मूल्य के व्यक्ति एक पशु के समान है। नैतिक मूल्य के अध्ययन के द्वारा व्यक्ति बुरी आदतों से अपने को नियंत्रित करता है और अपने को समाज में विभिन्न समुदाय, जाति, धर्म, रूढीवादी विचार से उपर उठकर सच्चाई ईमानदारी से समाज, देश के बारे में रचनात्मक विचार का उदय होता है।

अध्ययन का महत्व –

वर्तमान युग में हम सभी जानते हैं कि तकनीकी का हर क्षेत्र में प्रयोग होता जा रहा है मनुष्य अपनी आवश्यकता के लिए पूरी तरह तकनीक पर निर्भर हो गया है व्यक्ति का स्थान मशीनों ने ले लिया। व्यक्ति की क्षमता का महत्व कम हो गया है इसलिए मनुष्य पूरी तरह से रचनात्मक कार्यो में योग्य नहीं हो पा रहा है इसलिए पतन की ओर जाने की संभावना है। मनुष्य में नैतिक मूल्य के अध्ययन का बहुत महत्व है नैतिकता के कारण ही मनुष्य सही गलत बातों को समझता है अगर नैतिक मूल्य की जानकारी के अभाव में गलत मार्ग पर जा सकता है जिससे व्यक्ति गलत व्यवहार करके समाज में सामंजस्य बनाये रखने में परेशानी का सामना करना पड़ता है इसलिए नैतिक मूल्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

संबंधित शोध–अध्ययन

- **गो. ९१ जी. 1990** "विभिन्न वर्गों के चुनाव में चार सामाजिक मूल्यों के आधार पर उनको अच्छी नागरिकता का पूर्वानुमान।"

  उक्त शोध अध्ययन में पश्चिम बंगाल शहरी इलाकों में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व तथा सामाजिक व्यवहार कौशल के आधार पर उनकी नागरिकता का मूल्यांकन किया जाता है। शोध में कुल 25 विद्यालयों के 555 विद्यार्थियों को जिसमें 200 लड़कियाँ तथा 355 लड़के 16 से 18 वर्ष के थे, शौदेश्य प्रतिचयन द्वारा चयनित किए गए।

  काई स्ववायर टेस्ट उनके अशियतों का परीक्षण करने पर प्राप्त हुआ कि लड़कियों के मूल्यों में सहयोग व सामाजिक व्यवहार कौशल पर लड़कों से 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। शोध परिणाम यह भी बताते

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

है कि युवावर्ग आयु बढ़ने के साथ ही राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति न तो जागरूक है, और ना ही महत्त्वपूर्ण समझाता है अतः शिक्षा में इन सम्प्रत्यशों के विकास हेतु उचित प्रयास अत्यावश्यक है।

- **रेड्डी एवं वाड 1990** – "भारतीय युवाओं के मूल्य एवं सामाजिक अभिवृत्ति" यह प्रायोजन सी.एस.एस.आर. द्वारा वित्तद्योषित भारत के तीन राज्यों महाराष्ट्र, कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश के कुल 5 विश्वविद्यालयी किशोर छात्र–छात्राओं पर संचालित की गई परियोजना का मुख्य उद्देश्य भारतीय युवा गर्व में राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार रखे लिंग आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना था। परियोजना देंगे वर्ष तक चलाई गई जिसमें यादृच्छिक चयन विधि से चयनित तीन आयु वर्ग 15–17, 7–19.9 19 से 21 के बालक एवं ने अपने शोध में विभिन्न प्रकार के दिव्यांगों तथा 10 सामान्य व्यक्तियों के मध्य उनके प्रमापनी, राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्य प्रमापनो एव साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक आकड़ा का एकत्रीकरण किया गया।

  शोध परिणामों को कोई स्कावयर प्रविधि द्वारा विश्लेषित किया।

  शोध निष्कर्ष – से यह ज्ञात है कि 19–21 वर्ष के युवा वर्ग, राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक नहीं है इसमें भी उच्च सामाजिक स्तर वाले पुरूष वर्ग की अन्य समूहों से नकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई है 15–17 वर्षीय उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले स्त्री वर्ग में सामाजिक मूल्यों के प्रति स्तर तक पुरूष वर्ग में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। शोध परिणाम यह भी बात बताते है कि युवा वर्ग आयु बढ़ने के साथ ही राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति न तो जागरूकता है और (2003–2005) के हॉस्टल के विद्यार्थियों के सामाजिक संवेगात्मक एवं शैक्षिक उचित प्रयास अत्यावश्यक है।

- **धारित्री (2000)** –

  व्यावहारिक समस्या पर शोध किया। शोध परिणाम में उन्होंने पाया कि दिव्यांग बच्चों की बृद्धि तीव्र होती है पर उनका व्यवहार नकारात्मक होता है। यही नकारात्मक मनोवृत्ति उनके समायोजन को भी प्रभावित करती है। जिसके फलस्वरूप उनका शैक्षिक जीवन प्रभावित होता है। साथ ही उनके शैक्षिक उपलब्धि पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसक साथ ही दृष्टिहीन बच्चों को सामान्य बच्चों की अपेक्षा जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्र में लाभ देखने को मिला। उन्हें अपने सोच विचार एवं भावनाओं में सकारात्मक रूप से विकास होना पाया गया। परन्तु इसे उनके मोटर स्किल प्रदर्शन मे लागू नहीं किया जा सकता, जिसकी आज दृष्टिहीन बच्चों को ज्यादा आवश्यकता है।

- **हनसल एवं गौनकर (2008)** – ने

  समायोजन का अध्ययन शीर्षक पर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि हॉस्टल के विद्यार्थी अपने सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायाजन से संतुष्ट हैं एवं इनमें से समायोजन उच्च मात्राा में पाया गया। हॉस्टल एवं गैर हॉस्टलर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है लड़को का सामाजिक संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन लड़कियो से अच्छा पाया गया।

Research Paper © **2012 IJFANS. All Rights Reserved**

अध्ययन का उद्देश्य :– शिक्षण प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का आंकलन करना।

- शिक्षण प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन पर शहरी–ग्रामीण पृष्ठभूमि प्रभाव का अध्ययन करना ।प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन पर लिंग के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पना –

H_{01} शिक्षण प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

H_{02} शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

H_{03} ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षार्थीयों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी के द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है। जिसके अंतर्गत संबंधित चरो व घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है। जिससे प्राप्त परिणाम से वैज्ञानिक निष्कर्ष, नियम तथा सिद्धांतों की रचना, खोज व उसकी पुष्टि की जाती है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

H_{01} शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

Research Paper © **2012 IJFANS. All Rights Reserved**

पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका 1 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1

शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance
नैतिक मूल्य	600	0.359	p<.01
सामाजिक समायोजन	600		

r(df=598) at .05 level 0.07 and 0.10 at .01 level

तालिका 1 में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = 0.359 प्राप्त हुआ जो कि महाविद्यालयीन शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन के बीच सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर सामाजिक समायोजन के मान में भी वृद्धि होती है । अतः सहसंबंध गुणांक के अनुसार शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनका सामाजिक समायोजन भी सुदृढ़ होता है । तालिका 1 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक एवं धनात्मक

Research Paper © **2012 IJFANS. All Rights Reserved**

सहसंबंध सामाजिक समायोजन क साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{01} शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

H_{02} शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा । पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका 2 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 2

शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance
नैतिक मूल्य	300	0.373	p<.01
सामाजिक समायोजन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

तालिका 2 में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान $r = 0.373$ प्राप्त हुआ जो कि शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन के बीच सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर सामाजिक समायोजन के मान में भी वृद्धि होती है । अतः सहसंबंध गुणांक के अनुसार शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनका सामाजिक समायोजन भी सुदृढ़ होता है । तालिका 2 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि शहरी पष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध सामाजिक समायोजन के साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{02} शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss S . Issu1, 2022

नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

H_{03} ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा । पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका 3 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 3

ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

नैतिक मूल्य	300	0.342	p<.01
सामाजिक समायोजन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

तालिका 3 में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = 0.342 प्राप्त हुआ जो कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन के बीच सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर सामाजिक समायोजन के मान में भी वृद्धि होती है । अतः सहसंबंध गुणांक के अनुसार ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनका सामाजिक समायोजन भी सुदृढ़ होता है । तालिका 3 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध सामाजिक समायोजन के साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{03} ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

निष्कर्ष –

दुर्ग जिले के महाविद्यालयों के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य उनके सामाजिक समायोजन तथा व्यवहार विचलन को प्रभावित करते हैं, अतः शिक्षण पशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास उनके सामाजिक समायोजन को बढ़ाने तथा कक्षा एवं महाविद्यालय के परिप्रेक्ष्य में व्यवहार विचलन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

सुझाव :

1. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों के संदर्भ में उनके व्यक्तित्व का अध्ययन भविष्य में किये जाने वाले शोध का विषय हो सकता है ।
2. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों का आंकलन उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में भविष्य में किये जाने वाले शोध का विषय हो सकता है ।
3. नैतिक मूल्यों के संदर्भ में शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन भविष्य में किये जाने वाले शोध का विषय हो सकता है ।
4. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके सांस्कृतिक परिवेश के संदर्भ में अध्ययन भविष्य में किया जा सकता है ।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

संदर्भ सूचि :–

- क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों, एन.सी.ई.आर.टी. (1960) का माध्यमिक शिक्षक–शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम
- माध्यमिक शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम, गांधी विद्यापीटःवेदछी, गुजरात (1968)
- होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम (एच.एस.टी.पी.)
- शिक्षक–प्रशिक्षण, एकलव्य, मध्य प्रदेश (1982)
- प्रारंभिक शिक्षक–शिक्षा : एक एकीकृत उपागम मीटांबिका, श्री अरविंद शिक्षण सोसायटी, नयी दिल्ली (1983)
- प्रारंभिक शिक्षक–शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम बी.एल.एड. एम.ए.सी. ई. एस.ई. शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय (1994)
- 'अन्वेषण अनुभव : सद्भागी शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम : बी.एड. (संबंधित), शिक्षा विभाग वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान (1997)
- विस्तृत शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम, गांधी शिक्षण भवन, शिक्षा महाविद्यालय मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई (2000)।